Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

भक्ति आन्दोलन का उदय और विकास

Poonam Rani*

M.A. in Hindi (NET) Hisar, Haryana

शोध आलेख सार – *ईश्वर के प्रति जो परम प्रेम है उसे भक्ति कहते हैं। नारद भक्ति-सूत्र में कहा गया है कि 'परमात्मा' के प्रति परम प्रेम को भक्ति कहते है। भक्ति शब्द की निष्पति 'भज' धातु से हुई है जिसका अर्थ है 'सेवा करना' भक्ति में ईश्वर का भजन, पूजन, अर्पण आदि शामिल होता है।*

हिन्दी साहित्य के इतिहास का वर्गीकरण करने पर द्वितीय चरण को भक्तिकाल की संज्ञा दी गई है। तथा इसे पुनः दो भागों में विभाजित किया गया है। पूर्व मध्यकाल एवं उत्तर मध्यकाल पूर्व मध्यकाल को ही भक्तिकाल कहा जाता है। इस काल में मुगल सल्तनत भारत में स्थापित हो चुकी थी। मुस्लिम शासकों के अत्याचारों से आहत होकर हिन्दू जनता ने प्रभु की शरण में अपने आपको सुरक्षित महसूस किया और भक्ति मार्ग का अनुसरण किया। भक्ति आन्दोलन में नये विचारो का जन्म हुआ इसने भारतीय संस्कृति एवं समाज को एक दिशा दी। इस आन्दोलन ने एक और माननीय भावनाओं को उभारा, वहीं व्यक्तिवादी विचारधारा को सशक्त बनाया जिसमें भक्ति के माध्यम से ईश्वर से सम्पर्क स्थापित करके सदाचार, मानवता, भक्ति और प्रेम जरूरी समझा गया।

मुख्यशब्द – *तादात्मय, आन्दोलन, सर्वव्यापी, आगोचर, मुखरता*

----------X----------

भारतीय इतिहास का मध्यकाल कई मायनों में परिवर्तनों का काल रहा हैं। यह परिवर्तन राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृति, कलाओं और साहित्य इत्यादि में देखे जा सकते है। जिस समय मुसलमान भारत पर राज्य कर रहे थे, उस वक्त उन्होंने हिन्दू धर्म पर इस्लाम मानने का दबाव बनाया। इसी कारण की वजह से हिन्दुओं को धार्मिक रूप से आघात करने की कोशिश की और हिन्दुओं को भक्ति आंदोलन से हिम्मत मिली भक्ति-काल के उदय की व्याख्या के प्रंसग में रामचन्द्र शुक्ल जी लिखते है, देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया उनके सामने ही उसके देवमन्दिर गिराये जाते थे, देवमूर्तियाँ तोड़ी जाती थी और पूज्य पुरूषों का अपमान होता था और वे कुछ नहीं कर सकते थे। ऐसी दशा में अपनी वीरता के गीत वे न तो गा सकते थे और न बिना लज्जित हुए सुन ही सकते थे आगे चलकर जब मुस्लिम साम्राज्य दूर तक स्थापित हो गया जब परस्पर लड़ने वाले स्वंतत्र राज्य भी नहीं रह गये। इतने भारी राजनीतिक उलटफेर के पीछे हिन्दू जनसमुदाय पर बहुत दिनों तक उदासी सी छायी रही अपने पौरूष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करूणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था।''1 इस कथन से हमारे सामने राजनैतिक परिस्थितियाँ तो स्पष्ट हो जाती है। साहित्य का अध्ययन करने पर हमें यह पता चलता हैं कि आदिकाल में भी नाथों और सिद्धो के अंतर्गत यह दिखाया गया है कि नाथ पंथ ईश्वर को 'शून्य' रूप में मानते है जिसे वे 'अलख निरंजन' कहते है। नाथ पंथियों ने वैराग्य से मुक्ति सम्भव मानी है और वैराग्य गुरू की कृपा से मिलता है इसलिए गुरू दीक्षा तथा गुरूमंत्र का नाथ सम्प्रदाय में विशेष महत्व है। सिद्धों की साधनों को गुहा साधना कहा गया है। इनका मानना था कि ईश्वर को प्राप्त करना सबके बस की बात नहीं है। वे जादू-टोने में ही जनता को उलझा देते थे।

ऐसे समय में भक्त कवि जनता के हृदय को संभालने व लीन रखने के लिए भक्ति भाव को जगाने का प्रयास करने लगे।

स्वामी माधवाचार्य ने 'ब्राह्म सम्प्रदाय' नाम से द्वैतवादी वैष्णव सम्प्रदाय चलाया जिसकी ओर लोगों का झुकाव हुआ। इसके साथ ही द्वैताद्वैतवाद के संस्थापक निम्बार्काचार्य ने विष्णु के दूसरे अवतार श्री कृष्ण की प्रतिष्ठा विष्णु के स्थान पर की। वल्लभाचार्य जी ने भी कृष्ण भक्ति के प्रसार का कार्य

www.ignited.in

किया देश के पूर्व भाग में प्रचलित कृष्ण-राधा (जयदेव, विद्यापति) की प्रेम कथाओं को नवीन रूप प्रदान किया। जैन धर्म का प्रचार गुजरात से काठियावाड़ तक रहा है। हिन्दू धर्म इस्लाम के संपर्क से मात्र व्यक्तिगत साधना को केन्द्र न रहकर सामूहिक साधना का रूप धारण करने लगा था और उसमें आन्दोलनकारी प्रवृतियाँ उभरने लगी थी। सभी धर्मो में युगानुरूप परिस्थिति के अनुसार पंथो, सम्प्रदायो और उपसंप्रदायों तक की सृष्टि होने लगी, जिसके माध्यम से भक्ति आंदोलन का सूत्रपात हुआ।

भक्ति आंदोलन के उदय संबधी विविध धारणाए

भक्ति आंदोलन के उदय की व्याख्या साहित्यकारों तथा इतिहासकारों ने अपने-अपने ढंग से की है मगर भक्ति आंदोलन के सदंर्भ में यह माना है कि सबसे पहले भक्ति का उदय दक्षिण के आलवर संतो के यहाँ उत्पन्न हुई। इस सम्बन्ध में कहा गया है किः- 'भक्ति द्राविड़ी ऊपजी लाए रामानन्द' भक्ति का जो स्त्रोत दक्षिण भारत से धीरे-धीरे उतर भारत की ओर आ रहा था उसे राजनीतिक परिवर्तन के कारण शून्य पड़ते हुए जनता के हृदय क्षेत्र में फैलने के लिए पूरा स्थान मिला। रामानन्द रामानुजाचार्य की शिष्य परम्परा में हुए और उन्होंने रामानन्दी सम्प्रदाय खड़ा कर दिया तथा विष्णु के अवतार राम की उपासना पर बल दिया इन सभी का यह मूल उद्देश्य ज्ञान के साथ भक्ति का वादात्मय स्थापित करना था। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी व रामचन्द्र शुक्ल भक्ति के उदय की व्याख्या अलग-2 रूपों में करते हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी भक्ति आन्दोलन का प्रारम्भ हिन्दुओं की पराजित मनोवृति को नही मानते। वे कहते हैं:- "मुसलमानो के अत्याचार से यदि भक्ति की भावधारा का उमड़ना था तो पहले सिन्ध में और फिर उसे उतर भारत में प्रकट होना चाहिए था पर हुई दक्षिण में।"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपने इतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखते है कि "जब मुस्लिम साम्राज्य दूर दूर तक स्थापित हो गया, तब परस्पर लड़ने वाले स्वतंत्र राज्य नही रह गए इतने भारी उलट-फेर के पीछे हिंदू जनसमुदाय पर बहुत दिनों तक उदासी छाई रहीं, अपने पौरूष से हताश जाति के लिए भगवान की भक्ति और करूणा की और ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था।"

रामानुज मानते थे कि ईश्वर की भक्ति सभी वर्गो को समान रूप से करनी चाहिये लेकिन ईश्वर की प्राप्ति तभी हो सकती है जब ईश्वर का सच्चे मन से ध्यान किया जाये।

उतर भारत का भक्ति आंदोलन दक्षिण से अविरल धरा के रूप में इतिहास के विकास-क्रम में उतर भारत में फैला। इस आंदोलन से राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक सभी परिस्थितियाँ प्रभावित हुई। आज हम राष्ट्र एकता के रूप में इसे देख सकते हैं।

भक्ति आंदोलन के उदय संबंधी धाराएं

इस काल में ईश्वर के दो रूप माने गए हैं - सगुण एवं निर्गुण। जब परमात्मा को निराकार, अज, अनादि, सर्वव्यापी, अगोचर सूक्ष्म मानकर उसकी विवेचना की जाती है तब उसे निर्गुण ब्रह्मा कहा जाता है और जब वही ब्रह्मा सगुण साकार रूप धारण करके पर शरीर ग्रहण कर नाना प्रकार के कृत्य करता है तब उसे सगुण परमात्मा के रूप में जाना जाता हैं। सगुण तथा निर्गुण धाराएं सामानांतर चलती रही आगे चलकर निर्गुण धारा दो शाखाओं में बंट गई- एक तो ज्ञानाश्रयी शाखा तथा दूसरी प्रेममार्गी शाखा। ज्ञानाश्रयी शाखा के अन्तर्गत रामकाव्य और कृष्णकाव्य हैं। ज्ञानाश्रयी शाख्या के कवियो को संत कवि कहा जाता है इस शाखा के प्रतिनिधि कवि कबीर हैं। वही दूसरी ओर प्रेममार्गी शाखा को सूफी शाखा के नाम से जाना जाता है। इस काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि जायसी हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्त के अनुसार

"सगुणोपासक भक्त भगवान के सगुण और निर्गुण दोनों रूप मानता है, पर भक्ति के लिए सगुण रूप ही स्वीकार करता है, निर्गुण रूप ज्ञानमार्गियों के लिए छोड़ देता हैं।"

भक्ति साहित्य में भले ही निर्गुण-सगुण का भेद चला हो लेकिन मध्ययुगीन कवियों ने इस भेद को उस तरह से बढ़ने नही दिया जिससे इनके मानने वालों में वैमनष्य हो।

तुलसीदास जी ने कहा कि 'अगुनहि सगुनहि नहीं कुछ भेदा' इस प्रकार हम देखते है कि सगुण और निर्गुण उपासक दोनों में प्रेम और मानवता का धागा जुड़ा हुआ दिखाई देता है। भक्ति आंदोलन के उद्भव के कारण हिन्दू समाज के विभिन्न घटकों को संगठित करने का कार्य किया तत्कालीन परिस्थितियों में हिन्दू तथा मुसलमान निर्गुण तथा सगुण धाराओं के माध्यम से भी भेद भुलाकर मानवता के उदात्त मूल्यों की स्थापना में लगे हुए थे।

भक्ति आंदोलन परम्परा

भक्ति आंदोलन की परम्परा में चैतन्य महाप्रभु, रामानुचार्य, संत कबीर, संत तुकाराम आदि शंकराचार्य और संत रविदास ने मुखरता प्रदान की। चैतन्य महाप्रभु भक्तिकाल के प्रमुख कवियों में गिनेजाते है। इन्होंने वैष्णवों के गौड़ीय सम्प्रदाय की आधारशिला रखी तथा भजन गायकी की एक नयी शैली का विकास किया। इनके विचारों का सार यह है किः- श्री कृष्ण ही एकमात्र देव है वे मूर्तिमान सौन्दर्य हैं, प्रेमपरक है। उनकी तीन शक्तियाँ- परम ब्रह्मा शक्ति, माया शक्ति और विलास शक्ति है। श्री रामानुचार्य के दर्शन में सता या परमसत् के सम्बन्ध में तीन स्तर माने गए हैं ब्रह्म अर्थात ईश्वर, चित् अर्थत आत्मा तथा अचित अर्थात प्रकृति वस्तुतः ये चित्, अचित् ईश्वर से पृथक नहीं है बल्कि ये विशिष्ट रूप से ब्रह्म का ही स्वरूप है। वही दूसरी आरे विद्यमान हैं। कबीर के राम इस्लाम के एकेश्वरवादी एकसत्तावादी खुदा भी नहीं हैं। इस्लाम में खुदा या अल्लाह को समस्तजगत एवं जीवों से भिन्न एवं परम समर्थ माना जाता है। कबीर ने हिन्दू-मुसलमान का भेद मिटा कर हिन्दू -भक्तों तथा मुसलमान फकीरों का सत्संग किया और दोनों की अच्छी बातों को हृदयंगम कर लिया।

भक्ति आंदोलन के सभी संतो व कवियों ने उस समय समाज में फैली बुराइयों को रोकने का प्रयत्न किया और शैवों तथा वैष्णवों के बीच बढ़ते हुए विद्वेष को खत्म किया और लोक धर्म व भक्ति साधना को सम्मिलत करके जनता के सामने लाए।

निष्कर्ष

भक्ति के उद्भव एवं विकास के समय जो कुछ भी भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति तथा इतिहास को प्राप्त हुआ, वह स्वयं में अद्भुत, अनुपम एवं दुर्लभ है। उस युग के संत एवं महात्माओं ने अपने धार्मिक विचारों, सिद्धान्तों और उपदेशों से सामान्य जनता सामाजिक व धार्मिक एकता का न केवल पाठ पढ़ाया, वरन उन्हें ईश्वर प्राप्ति एवं धर्म का सच्चा मार्ग दिखलाया। तत्कालीन समय से लेकर आज तक उन संतों की विचारधारा एवं आदर्श ने लोगों का पथ प्रदर्शन किया है। उन संतों और महात्माओं के सच्चे अनुयायी आज भी उनके बताये हुए मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने जीवन को सार्थक व पूर्ण बना रहे है तथा मानव धर्म का प्रचार -प्रसार कर रहे हैं।

सन्दर्भ

1. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0-61
2. डॉ. अशोक तिवारी, प्रतियोगिता साहित्य सीरिज तृतीय प्रश्न पत्र पृ0 - 43
3. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0-61
4. डॉ. सीमा शर्मा, भारत के महान संत

Corresponding Author

Poonam Rani*

M.A. in Hindi (NET) Hisar, Haryana

poonamsihag222@gmail.com

www.ignited.in